कृषि कुंभ (फरवरी, 2023),
खण्ड 02 भाग 09, पृष्ठ संख्या 61–64

मुनाफे का सौदा है जरबेरा की खेती

सूरज अवस्थी, धीर प्रताप एवं संकेत कुमार

कृषि विभाग, इंटीग्रल विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश भारत

Email Id: surajavasthi95@gmail.com

परिचय

जरबेरा डेजी, (*ट्रांसवाल डेजी*), जरबेरा का फूल लोकप्रिय फूलों में से एक है। यह फूल दिखने में बहुत सुंदर और आकर्षक होता है। बाजार और मंदिरों में जरबेरा के फूल की काफी मांग है। जरबेरा का फूलों का मूल्य भी बाजार में अन्य फूलों से अधिक मिलता है। जरबेरा का फूल उत्साह का प्रतीक भी माना जाता है। इसके रंग–बिरंगे पंखुडियां तनाव को कम करने में काफी मदद करती हैं। इससे

सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। जरबेरा फूल की खेती नकदी फसल के लिए की जाती है, यह एक बहुवर्षीय फूल है, जिसे सर्वप्रथम अफ्रीका में पाया गया था। वर्तमान समय में जरबेरा फूल की तकरीबन 70 अलग–अलग किस्में मौजूद है। जो अपनी विशेष सुंदरता के लिए काफी लोकप्रिय है। इसमें फूल तना रहित निकलता है, जो कई रंगो में पाया जाता है, तथा यह फूल अधिक समय तक ताजे बने रहते है, जिस वजह से इन्हे सजावट के लिए अधिक इस्तेमाल किया जाता है। गर्मियों के मौसम में इन फूलो को आसानी से उगाया जा सकता है। आम आदमी इसे अपने घर, आंगन और बगीचों में आसानी से लगा सकते है। जरबेरा का फूल हर मौसम यानी साल के सभी 12 महीनों में खिलता है।

आज के समय में बाजार में इन फूलो की मांग काफी अधिक होने के कारण किसान भाई जरबेरा की खेती कर अच्छी आय भी अर्जित कर सकते है। भारत में जरबेरा की खेती कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, उत्तरांचल, अरुणाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, ओडिशा, महाराष्ट्र और गुजरात में अधिक मात्रा में की जाती है। जरबेरा फूल की खेती से कम लागत में अधिक मुनाफा कमा सकते है।

जरबेरा फूल के उपयोग और फायदे:

1. जरबेरा के फूल का उयपगो आप किसी को गुलदस्ते में देने के लिए कर सकते है। इसके ताजे फूलो के गुलदस्ते बाजार में बने बनाये मिलते है।
2. जरबेरा या डेजी जरबेरा का उपयोग शादी समारोह में सजावट के लिए किया

जाता है। यह फूल अन्य फूलो से महंगे होते है।

3. इसके पत्तो का इस्तेमाल कुछ आयुर्वेदक औषिधियों में भी किया जाता है। आयुर्वेद के अनुसार यह आमतौर पर दस्त जैसी बिमारियों की दवाइयां बनाए के काम में लिया जाता है।
4. इसके फूल को कई रेस्टुरेंट और होटलो में सजावट के लिए रखा जाता है। इसका कारण यह है, की अगर आप इस फूल को पानी के अंदर भी रख देतें है, तो यह लगभग दो हफ्ते तक हरा भरा रहता है।

जरबेरा फूल की खेती के लिए सहायक मिट्टी, जलवायु व तापमान

जरबेरा की खेती के लिए उपजाऊ मिट्टी जिसमे जल भराव न हो को उपयुक्त माना गया है। किन्तु अधिक मात्रा में उत्पादन लेने के लिए कार्बनिक पदार्थ युक्त बलुई दोमट मिट्टी की जरूरत होती है। इसके अलावा खेत की भूमि का पीच मान 5–8 के मध्य होना चाहिए। इसकी खेती के लिए समशीतोष्ण और उष्ण जलवायु को उचित माना गया है। सर्दियों का मौसम जरबेरा की खेती के लिए उपयुक्त नहीं होता है, क्योकि सर्दियों में इसके पौधे ठीक से विकसित नहीं हो पाते है। इसके अलावा वर्षा और गर्मी में पौध विकास अच्छे से होता है अधिक गर्मी के मौसम में इन्हे हल्की छाया देने के साथ–साथ ज्यादा सिंचाई भी करना होता है। जरबेरा के बीज सामान्य तापमान पर अंकुरित होते है, तथा बीज अंकुरण के पश्चात् पौधा गर्मी में अधिकतम 35 डिग्री तापमान को सहन कर सकता है। ठंडियों के मौसम में इन्हे उस जगह पर उगाए जहा पर रात का तापमान 10 डिग्री के आसपास हो। जरबेरा फूल की खेती में दिन में अधिकतम 25 डिग्री तथा रात में न्यूनतम 15 डिग्री का तापमान सबसे अच्छा होता है।

जरबेरा फूल की उन्नत किस्में

बाजार में जरबेरा फूल की कई उन्नत किस्में मौजूद है, जिन्हे उनके रंग और पैदावार के अनुसार अलग–अलग बांटा गया है।

- **लाल फूल वाली उन्नत किस्में** :– वेस्टा, तमारा, फ्रेडोरेल्ला, रुबीरेड, साल्वाडोर और रेड इम्पल्स
- **पीले फूल की किस्में** :– फूलमून, डोनी, सुपरनोवा, मेमूट, यूरेनस, तलासा, फ्रेडकिंग, नाडजा और पनामा।
- **नारंगी फूल की किस्में** :– कैरेरा, मारा सोल, कोजक, ऑरेंज क्लासिक और गोलियथ।
- **गुलाबी फूल की किस्में** :– टेरा क्वीन, वेलेंटाइन, पिंक एलिगेंस, रोसलिन, मारा और सल्वाडोर।
- **क्रीमी और सफेद फूल की किस्में** :– विंटर क्वीन, डेल्फी, डालमा, फरीदा, व्हाइट मारिया और स्नोफ्लेक।
- **जामुनी फूल की किस्में** :– ट्रीजर और ब्लैक जैक।

जरबेरा फूल के खेत की तैयारी:

जरबेरा फूल की खेती के लिए भुरभुरी और साफ भूमि की जरूरत होती है। इसके लिए आरम्भ में ही खेत में मौजूद पुरानी फसल के अवशेष नष्ट करके हटा दिए जाते है। इसके लिए पलाऊ लगाकर खेत की गहरी जुताई की जाती है। अब खेत को कुछ दिन के लिए खुला छोड़ दिया जाता है। खुले खेत में धूप लगने से मिट्टी में मौजूद हानिकारक जीव मर जाते है। इसके बाद पुरानी सड़ी गोबर खाद या वर्मी कम्पोस्ट खाद को खेत में डालकर अच्छे से मिला दे। अब खेत में पानी लगाकर पलेव करना होता है। पलेव के पश्चात भूमि सूखी हो जाने पर रासायनिक उवर्रक डालकर फिर से जुताई कर दी जाती है। इस तरह से

मिट्टी भुरभुरी दिखाई देने लगेगी, और फिर खेत में पाटा लगाकर भूमि को समतल कर दे। जरबेरा के पौधों की रोपाई बीज और पौध दोनों ही रूप में कर सकते है, इसलिए खेत में मेड़ को तैयार कर ले। इन मेड़ो का निर्माण दो फीट की दूरी पर करना चाहिए।

जरबेरा की पौध तैयार करना:

जरबेरा की पौध को तैयार करने के लिए कलम्प, बीज और उत्तक संवर्धन विधि को अपनाया जाता है।

- **कलम्प विभाजन :–** इस विधि को सबसे अधिक पहाड़ी क्षेत्रों में इस्तेमाल किया जाता है। इसमें पौधों को उखाड़कर उनकी कलम्प बना ली जाती है, और फिर उन्हें पॉलीथिन में रखकर नर्सरी में लगा दिया जाता है। इस माध्यम से पौधों का अंकुरण अधिक तेजी से होता है, तथा फूल भी कम समय में खिलकर तैयार हो जाते है।
- **बीज के माध्यम से पौध तैयार करना :–** बीज से पौध को तैयार करने के लिए बीजो को नर्सरी में लगाया जाता है। इसके लिए जब पौधों पर फूल निकलने लगे तब बीज को फूल से निकाल ले और फिर नर्सरी में तैयार क्यारियों में लगा दे। इसके बीज का अंकुरण 5 से 7 सप्ताह में हो जाता है। लेकिन बीज से तैयार पौधे को पैदावार देने में अधिक समय लग जाता है। इसलिए बीज से पौधा उगाना कम अच्छा होता है।
- **उत्तक संवर्धन :–** पौध निर्माण के लिए उत्तक संवर्धन की विधि को सबसे अच्छा माना जाता है। इसमें पौधों की कली, अग्र भाग और फूल के उत्तको द्वारा नई पौध तैयार की जाती है। इस तरह की पौध को प्रयोगशाला में तैयार किया जाता है।

जरबेरा के पौधों की रोपाई का तरीका और समय

जरबेरा के पौधों की रोपाई सर्दियों का मौसम छोड़कर पूरे वर्ष किसी भी मौसम में कर सकते है। लेकिन अधिक और उत्तम पैदावार के लिए इसे जून से अगस्त के महीने में लगाना सबसे अच्छा होता है। इसके अलावा फरवरी और मार्च का महीना भी पौध उगाने के लिए अच्छा होता हैद्य जरबेरा के पौधों को खेत के तैयार मेड़ में लगाया जाता है। नर्सरी में तैयार मेड़ो पर इसके पौधे एक फीट की दूरी पर लगाए जाते है। जरबेरा की पौध की रोपाई खेत में करते समय पौधे की जड़ो को ठीक तरह से मिट्टी में दबा दे, लेकिन नए सिरे से निकलने वाली किसी भी पत्ती को नहीं दबाया जाता है। जरबेरा के पौधों की रोपाई शाम के समय करना काफी अच्छा होता है, इससे पौधों का अंकुरण ठीक से होता है।

जरबेरा के पौधों की सिंचाई

जरबेरा के पौधों को अधिक सिंचाई की जरूरत होती है। इसकी पहली सिंचाई पौध रोपाई

के तुरंत बाद की जानी चाहिए। इसके बाद पौध अंकुरण होने तक हल्की सिंचाई करते रहे, तथा पौधों के विकास करने तक उन्हें उचित मात्रा में पानी देते रहे। गर्मियों के मौसम में जरबेरा के पौधों को सप्ताह में दो बार और सर्दी के मौसम में 15 से 20 दिन के अंतराल में पौधों को पानी दे। बारिश के मौसम में सिर्फ समय से बारिश न होने पर पौधों को पानी दे अन्यथा न दे।

जरबेरा के खेत में उर्वरक की मात्रा

जरबेरा के पौधों के अच्छे विकास के लिए उन्हें उचित मात्रा में खाद और उवर्रक देना

जरूरी होता है। इसके लिए प्रति हेक्टेयर के खेत में 15 से 20 गाड़ी सड़ी गोबर की खाद का इस्तेमाल किया जाता है, और रासायनिक उवर्रक के तौर पर 40 किलोग्राम फास्फोरस, 30 किलोग्राम नाइट्रोजन और 40 किलोग्राम पोटाश की मात्रा का इस्तेमाल करे।

जरबेरा की खेती में खरपतवार नियंत्रण

जरबेरा के पौधे अधिक लंबाई वाले नहीं होते है, इसलिए खरपतवार नियंत्रण करना बहुत जरूरी होता है, अन्यथा पौधों में कई तरह के कीट व रोगो का प्रभाव देखने को मिल सकता है। जिसका असर फसल की पैदावार पर होता है।

खरपतवार नियंत्रण के लिए प्राकृतिक तरीका अपनाना चाहिए, इसके लिए पौधों की दो से तीन गुड़ाई करनी होती है। जिसमे पहली गुड़ाई को तकरीबन 20 से 25 दिन बाद तथा बाकी की गुड़ाई को 15 से 20 दिन में करे।

जरबेरा के पौध रोग व उपचार

- **माहू :–** माहू एक कीट जनित रोग होता है, जिसका कीट पौधे के नाजुक हिस्सों पर समूह बनाकर आक्रमण करता है। यह कीट देखने में काले, पीले और हरे रंग के हो सकते है। इन कीटो से बचाव के लिए मेलाथियान की उचित मात्रा का छिड़काव पौधों पर करते है।
- **सफेद मक्खी :–** यह रोग जरबेरा के पौधों पर उसकी पत्तियों में देखने को मिलता है। सफेद मक्खी रोग से प्रभावित पौधे की पत्तिया सूखकर पीली पड़ जाती है, जिससे पौधे का विकास रूक जाता है। इस रोग से बचाव के लिए रोगर दवा का इस्तेमाल करते है।
- **जड़ गलन :–** जड़ गलन का रोग फफूंदी जनित रोग होता हैं, जो खेत में अधिक नमी या जलभराव की वजह से पौधों पर देखने को मिलता है। यह रोग भी पौध विकास को पूरी तरह से बंद कर देता है, और कुछ समय पश्चात ही सम्पूर्ण पौधा नष्ट होकर गिर जाता है। इस रोग से बचाव के लिए ऑक्सिक्लोराइड दवा का छिड़काव पौधों की जड़ो पर करते है, तथा जल निकास की उचित व्यवस्था बनाकर भी इस रोग से बच सकते है।
- **लीफ माइनर :–** इस रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियों पर सफेद और भूरे रंग की नालीनुमा पारदर्शी धारिया बन जाती है। जिसके बाद पौधा पोषक तत्व ग्रहण नहीं कर पाता है। क्लोरोडेन या टोक्साफेन दवा का छिड़काव पौधों पर करके इस रोग की रोकथाम की जा सकती है।

जरबेरा फूलो की कटाई–छटाई, और पैदावार

जरबेरा के पौधे रोपाई के तकरीबन 5 से 6 माह बाद पैदावार देना आरम्भ कर देते है। जब पौधों पर लगे फूल पूर्ण रूप से खिले दिखाई दे और जब दो तीन बाहरी पंखुड़ियों की लाइन डंठल के लंबवत हो जाए तब फूल की तुड़ाई करना चाहिए। फूलों की तुड़ाई सुबह या शाम में करना चाहिए। इसके बाद इन्हे पानी के बर्तन में रखे द्य आरम्भ में जरबेरा के फूलो को दो दिन में तोड़ना होता है, किन्तु जब फूल अधिक खिलने लगे तो प्रतिदिन कटाई करे। कटाई के पश्चात् सामान आकार वाली डंडियों वाले फूल की 12 से 15 डालियो को एकत्रित कर बंडल तैयार कर लिए जाते हैं। हर साल प्रति वर्गमीटर से 200 से 250 फूलों का उत्पादन होता है। एक बार रोपाई के बाद पौधों से 24 से 30 महीनों तक पौधों से उत्पादन लिया जा सकता है।

जरबेरा की खेती में लागत और कमाई

जरबेरा की खेती में जुताई से लेकर कटाई तक प्रति हेक्टेयर लगभग 2–3 लाख रुपए तक की कुल लागत आती है। वहीं अगर हम कमाई की बात करें तो बाजार में इस फूल की सुंदरता के कारण अधिक मांग होने से अच्छी कमाई होती है। एक वर्ष में एक वर्ग मीटर के क्षेत्रफल से 200 से 250 फूल मिल जाते हैं। जिन्हे बेचकर किसान भाई अच्छी कमाई कर सकते है। जरबेरा की खेती से आप लगभग 7 से 8 लाख रुपए आराम से कमा सकते है।